

रमजान, दस काम और हम

CHECK LIST

संकलन

**ARSHAD BASHEER UMARI MADANI SALLAMULLAAH
HAFIZ, AALIM, FAAZIL (MADINA UNIVERSITY, KSA) MBA
FOUNDER & DIRECTOR OF ASKISLAMPEDIA.COM**

**अलहम्दुलिल्लाह वहदह वस्सलातु वस्सलाम अला मल्ला नबी बादह व
अला इलाह व अस्हाबुहु अज्मयीन :**

रमजान एक प्रत्येक माह है। इसे मुसलमान बहुत महत्व देते हैं। इस माह की कुछ प्रत्येक आराधना एवं नियम हैं। इसे जानकार ही इस माह से अधिकतर लाभ उठाया जा सकता है।

इसी उद्देश्य से इस माह से सम्बंधित आवश्यक आराधना एवं नियम इस किताब में दिए गए हैं। ताके इस माह से बहुत अधिक लाभ उठाया जाए।

- SHORT NOTES
- CHECK LIST
- घर में सुधार, संशोधन करने के लिए कुछ नियम

इस समय मैं अल्लाह के धन्यवाद करना चाहता हूँ, उसी की सहायता से मैं इस कर्तव्य को पूरा कर पाया हूँ। (अल्लाह इसे स्वीकार (खुबूल) करे) और मैं मेरे उपकारक को भी धन्यवाद कहना चाहता हूँ। अल्लाह उन्हें उत्तम प्रतिफल दे, आमीन।

वस्सलाम

अरशद बशीर उमरी मदनी सल्लमल्लाह
फाउंडर, डायरेक्टर, आस्कइस्लामपीडिया

विषय सूची

1. रमजान एवं उपवास की विशिष्टता एक नज़र में
2. रमजान तथा विश्वास (ईमान) की सुरक्षा, तथा 11 नहीं करने वाले काम
3. रमजान और मन की सफाई तथा नियम
4. रमजान और घर का परिस्थिति
5. रमजान तथा आराधना के नियम
6. रमजान और मसाजिद
7. रमजान और दुआ
8. रमजान और खुरआन
9. रमजान के बाद उस पर बाखी रहने के तरीखे
10. रजब, शाबान और शब्वाल का परिचय

1. रमजान एवं उपवास की विशिष्टता एक नज़र में

रमजान और उपवास की विशिष्टता

1. रसूलुल्लाह ﷺ ने उपवास रखने वाले के लिए स्वर्ग (जन्मत) का वचन दिया है। (**सहीह बुखारी:1397, सहीह मुस्लिम:14**)
2. उपवासी के लिए स्वर्ग में प्रत्येक द्वार निर्मित किया गया है। उसका नाम रथ्यान है। (**सहीह बुखारी:1896, सहीह मुस्लिम:1152**)
3. उपवासी शहीद (वीरगति प्राप्त करने वालो) के साथ रहेगा। (**सही उत तर्फीब:1003**)
4. उपवासी के पूर्व पाप क्षमा कर दिए जाते हैं। (**सहीह बुखारी:1901, सहीह मुस्लिम:759**)
5. रमजान में स्वर्ग के तथा दया के द्वार पूरी तरह से खोल दिए जाते हैं, नरक के द्वार पूरी तरह से बंद कर दिए जाते हैं और शैतान को बंद कर दिया जाता है। (**सहीह बुखारी:1899**)

6. उपवासी के मुह की श्वास कस्तूरी से अधिक पवित्र है। (**सहीह बुखारी:1904**)
7. माह रमजान की हर रात अल्लाह कुछ योग्य लोगों को नरक से मुक्त करता है। (**इब्ने माजह:1642, सहीह इब्ने माजह:1331**)
8. प्रलय के दिन उपवास उपवासी के लिए अनुग्रह (सिफारिश) करेगा। (**सही उत तर्धीब:984**)
9. उपवास अच्छाई का द्वार है। (**तिरमिज़ी:2616, सही उत तर्धीब:983**)
10. हजार माह से उत्तम रात इसी माह रमजान में है (शब्दे खदर)। (**सही इब्ने माजह:1333, इब्ने माजह:1644**)
11. खुरआन रमजान ही में अवतरित (नाजिल) हुआ। (**बखरह:185**)
12. उपवास का प्रतिफल प्रत्येकता से अल्लाह ही देगा, हर पुन्य का प्रतिफल 10 से 700 गुना बढ़ा कर दिया जाएगा। (**सहीह मुस्लिम:1151**)
13. एक नफिल उपवास नरक से 70 (सत्तर) साल दूर कर देता है, तो फ़र्ज़ उपवास की विशिष्टता कितनी होगी अनुमान लगाइये। (**सहीह बुखारी:2840**)
14. रमजान में उमरह का प्रतिफल नबी करीम ﷺ के साथ हज करने के बराबर हो जाता है। (**सहीह बुखारी:1863, सहीह मुस्लिम:1256**)
15. सहर से इफ्तार तक उपवासी की दुआ (प्रार्थना) स्वीकार की जाती है। (**तिर्मिज़ी:3598, इब्ने माजह:1752**)

2. रमजान तथा विश्वास (ईमान) की सुरक्षा, तथा 11 नहीं करने वाले काम

1. ईमान की सुरक्षा (इस्लाम, ईमान तथा एहसान के मूल की समझ)

अरबी टेक्स्ट

अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस रजिअल्लाहुअन्हुमा कहते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने कहा : "वस्त्र जिस तरह कमज़ोर हो (बेकार, सड़) जाते हैं उसी तरह मन में ईमान भी कमज़ोर होता जाता है, अल्लाह से प्रार्थना करते रहो कि वह तुम्हारे मन का ईमान सुरक्षित रखे।" (सहीह जामेः1590)

2. इलाही के प्रेम तथा उपासना की सुरक्षा एवं उलूहियत।

(जारियातः56)

3. रसूलुल्लाह ﷺ का प्रेम तथा अनुसरण की सुरक्षा। (आले

इमरानः31)

4. प्रलय दिन की फिकर तथा समझ की सुरक्षा। (अल हश्रः18)

5. अल्लाह के अधिकार तथा लोगों के अधिकार की सुरक्षा। (सहीह बुखारीः6267, सहीह मुस्लिमः2581)

6. मुस्लिम के छे अधिकार तथा मानवता के अधिकार की सुरक्षा।

(सहीह मुस्लिमः2162)

7. उपासना के नियम की सुरक्षा (तहारत, सलाह, सौम, जकात, हज के विषय की शोधना, ज़ईफ़ व मौजू [अप्रमाणित] को छोड़ कर प्रमाणित हदीस एवं आयात को समझें)।

8. अखीदा (विश्वास), उपासना, सम्बन्ध, स्वभाव के ज्ञान की सुरक्षा।

9. मन का सुधार।

10. खायम रहना।

11. मन की पवित्रता।

12. वसीयत लिखना।

13. मरण का विषय।

14. ज़बान की पाबंदी, झूट, चुघल खोरी, चापलूसी, दूसरो पर दोश लगाना इत्यादि जैसी ज़बान की गंदगियों से बचना।

15. अल्लाह का जिकर अधिक से अधिक करना।

16. तक्का (अल्लाह का डर) कैसे प्राप्त करे? तवक्कल (अल्लाह पर भरोसा) कैसे प्राप्त करे? खुशू (अल्लाह की उपासना में खुशी) कैसे प्राप्त करे? खुरआन तथा हदीस का पाठ उलमा (धार्मिक विद्वाम्स) के साथ बैठकर प्राप्त करना चाहिए।

17. तौबा एवं अस्तधार (पश्चाताप) का विधान सीखे, सच्चदुल अस्तधार याद करे, अल्लाह तथा बन्दों से क्षमा चाहना, वरदान (नेमत) पर धन्यवाद देना।
18. पुन्य परिवर्तन।
19. रमजान के वारों का लौटना।
20. मधिरत (पश्चाताप) कर लेना।
21. बुरी सांगत और बुरे लोगों से दूरी।
22. मधिरत ए रब की सुरक्षा, मधिरत ए रसूल तथा मधिरत ए इस्लाम (उसूले सलासा)।
23. ज्ञान एवं ईमान (विश्वास), पुन्य कार्य, दूसरों को पुन्य की ओर बुलाना, धैर्य (सब्र)।
24. केवल उपासना का अनुसरण : सलातुल तरावीह, एतेकाफ़, लैलतुल खदर, उपवास तथा ज़कात (यदि एक साल गुजर जाए तब नियमित हिस्साब के साथ), उमरह, सदखा खुरआन पढ़ना, दुआ (प्रार्थना), अज्कार (अल्लाह की बडाई करना)।
25. अल्लाह की ओर लौटना, अल्लाह से सम्बन्ध बनाना, अल्लाह से सम्बन्ध (रुबूबियत, उलूहियत, अस्मा व सिफात)।
26. मस्जिद के दिल का सम्बन्ध।
27. कुकर्म तथा पाप के कार्य से बचना।
28. अप्रामानित विषयों से बचना।
29. अखीदा (विश्वास) में गन्दगी जैसे शिर्क (बहुदैवाराधना), कुफ्र (अविश्वास), निफाख (कपट) से बचना, उपासना में बिदत (अस्वीकृत कार्य) से बचना, मामलात में हराम से बचना।
30. जब मनुष्य को खबर में रखा जाता है, तब अजाब (शिक्षा) आना चाहता है, उस समत चारों ओर पुन्य कार्य (आमाल) खड़े हो जाते हैं तथा अजाब (शिक्षा) से सुरक्षित रखते हैं। (**इन्ने माजहः113, सहीह उत्तरीबः3561, हसन**)

arabic text

अबू हुरैरह रजिअल्लाहुअन्हु कहते हैं के नबी ﷺ ने कहा : जब मृत शरीर को खबर (स्मशान) में रखा जाता है तो वो (तद्फीन के बाद) वापस पलटने वालों के जूतों की आवाज सुनती है, यदि मृतक मुसलमान (विश्वासी) हो तो नमाज उसके सर के पास, रोज़ा (उपवास) दाए और, ज़कार (विधि दान) बाए और, दूसरे पुन्य कार्य – सदखा, नवाफिल, लोगों के साथ भलाई तथा हुस्ने सुलूक (उत्तम व्यवहार) पाँव की तरफ से उस मृतक की सुरक्षा करते हैं। फ़रिश्ता (अल्लाह का दूत) अजाब (शिक्षा) के लिए सर की ओर से आता है, तो नमाज कहती है मेरी ओर से रास्ता नहीं है, फिर फ़रिश्ता दाए और से आता है, तो रोज़ा (उपवास) कहता है मेरी ओर से रास्ता नहीं है, फिर फ़रिश्ता बाए और से आता है, तो ज़कात कहती है मेरी ओर से रास्ता नहीं है, फिर फ़रिश्ता पाँव की तरफ से आता है, तो दूसरे पुन्य कार्य – सदखा खैरात (दान धर्म), सिला रहमी (दया तथा करुणा), लोगों के साथ भलाईयां एवं अहसान (उच्च व्यवहार) आदि कहते हैं के मेरी ओर से रास्ता नहीं है।

रमजान तथा महिलाओं के लिए अतिरिक्त 9 विषय

1. शुक्र (धन्यवाद) का माह, ना के ना शुक्री का।
2. अहकाम (कर्म) का ज्ञान सीखना (उपवास एवं ज़कात, तहारत (पवित्रता), सलाह (नमाज़), दुआ (प्रार्थना), अज्कार (अल्लाह का ज़िक्र) तथा उपासना)।
3. अखीदा उचित (सहीह) होना चाहिए।
4. उपवास का माह है ना के केवल खाने का माह।
5. खुरआन पाठ करने का माह है ना के बिना वजह अधिक बात करने का।
6. अहसान का माह है ना के समय बर्बाद करने का।
7. खियाम का माह।
8. केवल भूक का उपवास नहीं, सारे शरीर का उपवास।
9. समय का पालन, नियम का पालन करने का माह।

2. रमजान तथा विश्वास (ईमान) की सुरक्षा, तथा 11 नहीं करने वाले काम

1. खजा (छूटे उपवास की भरपाई) उपवास की पूर्ती शाबान की माह में ही कर लेनी चाहिए।
2. रमजान के अभिवादन के लिए शाबान के अंतिम दो दिन उपवास रखना मना है।
3. शाबान की माह में सुस्ती (आलसीपन) ना करे।
4. Busy (व्यस्त) के बहाने से बचे, व्यापार से समय निकाले तथा उपासना पूरी श्रद्धा से करे।
5. उपवास के नियम तथा रमजान के आराधना के नियम ना जानना।
6. मन की पवित्रता के नियम, (आराधना, सम्बन्ध, व्यवहार के नियम) ना जानना एवं उसके लिए प्रयत्न ना करना।
7. मुक्ति की फिकर में सुस्ती, मधिरत (क्षमा) कराने में सुस्ती, सथ्यदुल इस्तेघार याद ना करना।
8. झगड़ों में पड़ जाना।
9. रमजान में खेल कूद का प्रबंध समय बिताने के लिए।
10. मुस्लिम सभाओं से दूर रहना, धर्म से दूर लोगों के साथ समय बिताना, नमाज तथा उपवास व्यर्थ कर लेना।
11. अखीदा तथा उपासना, खुरआन का पाठ, दुआ तथा मसाजिद का प्रबंध ना करना।

3. रमजान और मन की सफाई तथा नियम

I. मन की पवित्रता के लिए सूचित निर्देश का पालन करे :

1. ईमान (विश्वास), इख्लास एवं इत्तेबा।
2. pg 13